Impact Factor – 6.261 • Special Issue - 157 • March 2019 • ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

UGC Approved Journal

Multidisciplinary International E-research Journal

Printed by

PRASHANT PUBLICATIONS

3, Pratap Nagar, Sant Dnyaneshwar Mandir Road, Near Nutan Maratha Mahavidyalaya, Jalgaon.

Website: www.prashantpublications.com Email: prashantpublicationjal@gmail.com

Ph: 0257-2235520, 2232800, 9665626717, 9421636460

EDITORIAL POLICIES - Views expressed in the papers / articles and other matter published in this issue are those of the respective authors. The editor and associate editors does not accept any responsibility and do not necessarily agree with the views expressed in the articles. All copyrights are respected. Every effort is made to acknowledge source material relied upon or referred to, but the Editorial Board and Publishers does not accept any responsibility for any inadvertent omissions.

४२. वर्तमान परिदृश्य में पर्यावरण चेतना और मीडिया की भूमिका (विदर्भ क्षेत्र के विशेष संदर्भ में) १०५
प्रो. अनिल कुमार राय, चेतन धुवे

४३. आदिवासी संस्कृति और पर्यावरण १०९
प्रा. वाजिया परवीन शेख आरिफ

४४. सामाजिक विकास और पर्यावरण १११
डॉ. जयश्री बहुरे

४५. प्राचीन एवं आधुनिक साहित्य में पर्यावरण संरक्षण ११३
डॉ. राजेश्वर भुटेरे

४६. पर्यावरण संरक्षण के संवैधानिक प्रावधान ११६
प्रदीप कुमार अग्रवाल

४७. साहित्य और पर्यावरण ११९
डॉ. श्यामप्रकाश आ. पांडे

४८. प्रिंट मीडिया और पर्यावरण १२२
राजेश लेहकपुरे

४९. भारतीय संविधान और पर्यावरण १२४
सतीश डी. कराडे

५०. पर्यावरण संरक्षण में जनमाध्यमों की भूमिका का अध्ययन १२६
डॉ. पु. अरुणा आणी गढ़ी

५१. पर्यावरण चिंतन और समकालीन आदिवासी कविता १२८
डॉ. गजानन किशनराव पोलेकर

५२. डिजिटल युग में भारतीय पारिस्थितिकी और पर्यावरण १३१
संदीप कुमार वर्मा

५३. हिंदी साहित्य में पर्यावरण १३३
डॉ. ज्योति एच. मली

मराठी

५४. आदिवासी कविता : पर्यावरणवादी दृष्टिक्षेप १३५
प्रा. प्रमोद वाळके

५५. पर्यावरण शिक्षण व शिक्षकांची भूमिका १३८
डॉ. चंदू के. पोपरकर

५६. ऊसतोड महिला कामगारांची स्थिती व जीवनविषयक दृष्टिकोन १४०
सहा. प्रा. महादेव चैतन्य धुर्वे

५७. लोकसंख्या वाढ आणि पर्यावरण १४२
डॉ. अरविंद बा. धोंगडे

५८. लोकगीतातील निसर्ग आणि पर्यावरण १४५
प्रा. डॉ. एन. एच. खोडे

५९. बुलढाणा जिल्ह्यातील कृषी भूमी उपयोजन कार्यक्षमतेचे पर्यावरणीय दृष्टिकोनातून अध्ययन १४८
संदीप रमाकांत बारापे

६०. पर्यावरण प्रदूषण आणि पर्यावरण नीती १५०
डॉ. प्रवीण प. काळे

६१. भूमंडलीकरण व जलसंपदेचे संवर्धन १५१
डॉ. संजय घनविजय

६२. वाढत्या लोकसंख्येचा पर्यावरणावर होणारा परिणाम – एक अभ्यास १५३
प्रा. राजेश्वर एस. खडकर

RESEARCH JOURNEY International Multidisciplinary E-Research Journal ISSN : 2348-7143
Impact Factor (SJIF) - 6.261 | Special Issue 157 : पर्यावरण संरक्षण में साहित्य, समाज और मीडिया की भूमिका March 2019

साहित्य और पर्यावरण

डॉ. श्यामप्रकाश आ. पांडे
सहयोगी प्राध्यापक व हिंदी विभाग प्रमुख
कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय, आर्वी, वर्धा

वैज्ञानिकों ने पर्यावरण की परिभाषा करते कहा है कि पर्यावरण (अंग्रेजी: Environment) शब्द का निर्माण दो शब्दों से मिलकर हुआ है। परि जो हमारे चारों ओर है आवरण जो हमें चारों ओर से घेरे हुए है। पर्यावरण उन सभी भौतिक, रासायनिक एवं जैविक कारकों की समष्टिगत इकाई है जो किसी जीवधारी अथवा परितंत्रीय आबादी को प्रभावित करते हैं तथा उनके रूप, जीवन और जीविता को तय करते हैं।१ मानव का पर्यावरण के साथ संबंध मानव जीवन के अस्तित्व में आने के साथ ही आरंभ हो गया था, यह एक सर्वज्ञात तथ्य है। और यह भी कि साहित्य और पर्यावरण का संबंध मानव जीवन में भाषा के प्रवेश के साथ ही आरंभ के हो चुका था, जिसमें दोमत नहीं हो सकते हैं। पर्यावरण के संदर्भ में मानव के विचारों में परिवर्तन को मौखिक व लिखित साहित्य में लगातार स्थान प्राप्त हुआ है, उन्हीं विचारों के आधार पर मानवीय जीवन में पर्यावरण चेतना को साहित्य में निरंतर स्थान प्राप्त हुआ है। पर्यावरण चेतना के विस्तार में पुरातन काल से साहित्य की महती भूमिका रही है। यहीं हमारे प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य आधारबिंदु है।

यह सर्वमान्य है कि प्रदूषण की समस्या वर्तमान में एक बहुत ही गंभीर वैश्विक समस्या बन चुकी है। वायु, जल, ध्वनि, मिट्टी, भूमि, आकाश सभी कुछ प्रदूषित हो चुका है। संपूर्ण विश्व आज पर्यावरण प्रदूषण की समस्या से जूझ रहा है। विश्व स्वास्थ्य संगठन की एक रिपोर्ट के अनुसार विश्व की आबादी का ९१ % हिस्सा ऐसे वायुमंडल में रहने के लिए बाध्य है, जिसमें वायु की गुणवत्ता मानकों के स्तर पर अत्यंत निम्न स्तर की है। विश्व में ७० लाख लोगों की मृत्यु प्रतिवर्ष केवल प्रदूषण के कारण होती है। भारत के संदर्भ में यह दशा और भी चिंताजनक है। २०१८ की एक रिपोर्ट के अनुसार विश्व के १५ अति प्रदूषित शहरों में से १४ शहर भारत के हैं। भारत में २०१६ में एक लाख दस हजार बालकों की मृत्यु वायु में स्थित वायिक कणों (पीएम) के कारण होने का दावा किया गया है। इस समस्या के संदर्भ में विश्व मानव समाज में पर्यावरणविद्, वैज्ञानिक, सामाजिक, साहित्यिक तथा राजनीतिज्ञ सभी स्तरों चिंतन किया जा रहा है।२

साहित्य का अध्ययन करने पर पता चलता है कि जब से मानव समूह बनाकर जंगलों में निवास करता था, तभी से प्रकृति को स्वयं से अधिक महत्व दिया करता था और मानव स्वयं को पर्यावरण का एक घटक मानता था। आज भी अनेक आदिवासी समूहों का लिखित साहित्य न होने के बावजूद उनके द्वारा गाये जाने वाले प्रकृति गीत इस तथ्य की पुष्टि के लिए पर्याप्त है। उदा. स्वरूप निम्न गीत की पंक्तियों को देखा जा सकता है, जिसमें युवती प्रकृति का उदा. देते हुए फूलों से पराग लेने वाले भंवरे की तरह अपने यौवन का आनंद लेने हेतु प्रेमी को आमंत्रित रही है -

''मार वारिमां फूलां हें'ला उदा, फूलां हें'ला उदा, पमरो पोग लें हें'ला उदा।''३

प्रकृति, सूर्य, नदियां, पर्वत, वायु, अग्नि, भूमि तथा आकाश इत्यादि घटकों को देवस्वरूप मान उनकी ही आराधना मानव करता था, इसके लिए ऐतिहासिक तथ्य और प्रमाणस्वरूप सभी वेदों के मंत्रों को प्रस्तुत किया जा सकता है। सभ्यता के विकास के साथ धीरे-धीरे मानव समाज ने स्वयं के विषय में अधिक सोचना आरंभ किया और प्रकृति के बारे में विचार करना कम कर दिया। तत्कालीन ऋषियों को ज्ञात हो चुका था कि प्रकृति का दोहन होने लगा है, तो चेतावनी देते हुए, वायु पुराण के रचयिता महर्षि वेद व्यास ने लिखा है कि -इस सृष्टि के अपने स्वरूप में अधिष्ठित हो जाने पर इसका अंधाधुंध दोहन न किया जाए, क्योंकि मनुष्य के क्रियाकलापों तथा अतिशय भोगवादिता के कारण प्राकृतिक पदार्थों में वे दोष उत्पन्न हो जाते हैं, जो कल्प के अंत में आनेवाली प्रलय का कारण बनते हैं।४यह ध्यातव्य है कि मानव ने पर्यावरण का दोहन करते हुए भी स्वयं को प्रकृति से अलग नहीं माना था, इसीलिए गुरुगोरखनाथने लिखा है कि- ''जोई-जोई पिंडे,सोई-सोइ ब्रह्मांडे ''अर्थात मानव स्वयंपर्यावरणीय तत्वों या घटकोंसे निर्मितहै,पर्यावरणमें जो-जो तत्त्व हैं,वेही सारे मानवीय शरीरमें विद्यमान है। कबीरने भी कुंभमें जल, जलमें कुंभ है, बाहर भीतर पानी। फूटाकुंभ, जल जल ही समाना, यह तत कह्यो ग्यानी' कहते हुए मानव और पर्यावरण के संबंध को स्पष्ट किया है। तुलसीदासनभी ''छिति जल पावक गगन समीरा, पंच रचित अति अधम''कहकर मानवको पर्यावरणकाही अंग बताया है।

सभ्यता से दूर मानव जाति पर्यावरण से अपना संबंध आज भी बनाए हुए किंतु सभ्यता के शिखर पर पहुँचे अर्थात् स्वयं को विकसित मानने वाले मानव समाज ने स्वयं को पर्यावरण का भाग मानने से इन्कार कर दिया है। जिसकी पुष्टि जेमिसन के शब्दों से होती है, वे लिखते हैं कि सामान्यतः पर्यावरण को मनुष्य के संदर्भ में परिभाषित किया जाता है और मनुष्य को एक अलग इकाई और उसके चारों ओर व्याप्त अन्य चीजों को उसका पर्यावरण घोषित कर दिया जाता है।५सभ्यता और भौतिक सुख-सुविधाओं ने मानव को स्वार्थी बना दिया है, वह सुविधाओं को पा कर ऐसा उलझ गया कि उसे केवल और केवल पैसा दिखाई देने लगा-

''खेतों की मेडों की ओस नमी मिट्टी,
जितनी देर मेरे इन पावों में लगी रही,
उतनी देर जैसे मेरे सब अपने रहे,
उतनी देर सारी दुनिया सगी रही,
किन्तु मैंने ज्योंही मोजे-जूते पहन लिए
जेब के पर्स का ख्याल आने लगा।''६

सभ्य मानव को लगता है कि पैसे से वह सब-कुछ खरीद सकता है। और शायद यही कारण है कि उसने जल का अति दोहन करना आरंभ कर दिया। शहरों में अधिकतम घरों में नलकूपों के जल के द्वारा अपनी आवश्यकता की पूर्ति की जा रही है। आवश्यकता न होते हुए भी अनेक उद्योगों में जल का दुरुपयोग हो रहा है, जिससे कुएँ, तालाब, बावड़िया, नदियां सूख रही है। नवगीतकार डॉ. ओमप्रकाश सिंह ने सूखते जलस्रोतों की भी ओर ध्यान दिलाते हुए लिखा है कि -

''प्यासी आँखे,
प्यासे पनघट,
प्यासे ताल-तलैया,
बिना पानी के,
यह जिन्दगानी,
काँटों की है शैय्या।''७

मानव नदियों में से रेत उठा-उठा कर कांक्रिट के जंगल खड़े करता जा रहा है। आवश्यकता या जरूरत के कारण नहीं, बल्कि केवल पैसों के प्रदर्शन हेतु बंगले या अट्टालिकाएं बनाना सभ्य मानव का शौक बन चुका है। पैसों के लिए खनन माफिया रेत जैसे प्राकृतिक खनिजों का अंधाधुंध दोहन कर रहे हैं। मानो नदियों से उनका कोई लेना-देना ही नहीं हो, वे भूल चुके हैं कि प्रकृति का कोप-भाजन उन्हें भी बनना पड़ेगा। ऐसा लगता है अपनी बदहाली पर नदियाँ सिसक रही हो। रचनाकार हरिराम 'समीप' द्वारा रचित दोहे में नदी की व्यथा सुनाई पड़ती है-

''बिटिया को करती विदा,
माँ ज्यों नेह समेत!
नदिया सिसके देखकर,
ट्रक में जाती रेत!!''८

मानव ने पैसों के अभिमान, अल्पज्ञान अथवा स्वार्थवश प्रकृति का विनाश किया है, बार-बार समझाने के बावजूद वह समझ ही नहीं पाता है, अथवा न समझ पाने का स्वांग करता है, उस पर व्यंग्य करते हुए गीतकार ब्रह्मजीत गौतम ने यह गीत लिखा है -

कह-कह कर थक गए सुधी-जन, जल ही जीवन है।
किन्तु किसी ने बात न मानी, क्या पागलपन है!!
सूख रहे जल-स्रोत धरा के
नदिया रेत हुई
अंधकूप बन गए कुँए
बावड़ियाँ खेत हुई
तल में देख दरारें, सर भी करता क्रन्दन है!
काट-काट कर पेड़
सभी जंगल मैदान किए
रूठे मेघ, जिन्होंने भू को
अगणित दान दिए
मानव तेरे स्वार्थ का शत-शत अभिनन्दन है!
किया अपव्यय पानी का
संरक्षण नहीं किया
फेंक-फेंक कर कचरा
सब नदियों को पाट दिया
अपने हाथों किया मयस्सर अपना उलझन है।

जल, जंगल के साथ आकाश की स्थिति अत्यंत भयभीत करने वाली है। मानव द्वारा प्रस्थापित औद्योगिक इकाईयों और बढ़ती बसों, ट्रकों, कारों और मोटरसाईकिलों से निकले कार्बनडाई आक्साईड से ओझोन परत में छेद हो चुका है, -

''हैलो मनुष्य
मैं आकाश हूँ,
कल सृजन था, निर्माण था,
आज प्रलय हूँ, विनाश हूँ।
मेरी छाती में जो छेद हो गए है काले-काले,
ये तुम्हारे भालों के घाव है,
ये कभी नहीं भरने वाले।''१०

उसी प्रकार निरंतर चेतावनियों के बाद भी मानव लगातार नित नई खोजों के लिए प्रकृति का विनाश किए जा रहा है। सरकारें भी औद्योगिक विकास की अंध दौड़ में प्रकृति के नियमों की लगातार अनदेखी किए जा रही है। औद्योगिकीकरण के बाद परमाणु उर्जा के उपयोग एवं अनुसंधान तथा सूचना प्रौद्योगिकी का विस्तार हुआ। जिससे निकलने वाले रेडियो एक्टीव तत्व व रेडियोधर्मी तरंगे छोटे प्राणियों के प्राणों को हरने का कार्य कर रहे हैं, तो मानव मस्तिष्क व शरीर पर उसके प्रभावों को महसूस किया जा रहा है। इसका अंत क्या होगा? कैसे होगा? पता नहीं। जयशंकर प्रसाद के शब्दों में -

''मनि-दीपों के अंधकारमय
अरे निराशा पूर्ण भविष्य
देव-दंभ के महामेध में
सब कुछ ही बन गया हविष्य।''११

वासनाओं के अधीन विलासितापूर्ण जीवन जीने का आदि बन सभ्य मानव दो महायुद्धों की विभीषिकाएं झेल चुका है। विश्व में प्रत्येक देश दूसरे देश को, और प्रत्येक मनुष्य दूसरे मनुष्य को पर्यावरण प्रदूषण के बारे बता रहा है, चिंता कर रहा है, जबकि गलाकाट प्रतिस्पर्धा के दौर में कोई किसी से पीछे नहीं रहना चाहता। किंतु समय रहते उपाय नहीं किए गये तो वह दिन दूर नहीं जब जयशंकर प्रसाद की ये पंक्तियां साकार हो हमें बार-बार याद दिलायेंगी कि-

''प्रकृति रही दुर्जेय, पराजित
हम सब थे भूले मद में,
भोले थे, हाँ तिरते केवल सब
विलासिता के नद में।
वे सब डूबे, डूबा उनका विभव,
बन गया पारावार
उमड़ रहा था देव-सुखों पर
दुख-जलधि का नाद अपार।''१२

संदर्भ :

१. अंतरजाल, विकिपीडिया, पर्यावरण
२. भारत में वायु प्रदूषण किस कदर मानव जीवन के लिए एक चुनौती, डॉ.नीलम महेन्द्र, अंतरजाल पत्रिका, प्रभा साक्षी,दि.

१७ नवंबर, २०१८ .https://www.prabhasakshi.co

३. .http://ignca.gov.in/PDFsdata/-adivasisLoksahityas Shastras Chps1s12.pdf

४. .डॉ.सत्येन्द्र प्रकाश, डॉ.राघवेन्द्र प्रसाद, समकालीन हिंदी साहित्य में पर्यावरणीय चिंतन का अनुशीलन,International Journal of Hindi Research,www.hindijournal.com,Volume 3; Issue 2; March 2017; Page No. 112-115

५. .Jamieson, Dale. (2007). The Heart of Environmentalism. In R. Sandler P. C. Pezzullo. Environmental Justice and Environmentalism. (pp. 85-101). Massachusetts Institute of Technology Press

६. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना, बाँस का पुल(कविता संग्रह), पृ.३०

७. आज के कवियों की पर्यावरण चिंता- लेख, डॉ.योगेन्द्रनाथ शर्मा, जनवरी २०१५,hindi.indiawaterportal.com

८. आज के कवियों की पर्यावरण चिंता- लेख, डॉ.योगेन्द्रनाथ शर्मा, जनवरी २०१५,hindi.indiawaterportal.com

९. आज के कवियों की पर्यावरण चिंता- लेख, डॉ.योगेन्द्रनाथ शर्मा, जनवरी २०१५,hindi.indiawaterportal.com

१०. ऋषभदेव शर्मा, मै.आकाश बोल रहा हूँwww.essence-journal.com,३०जून, २०१५

११. कामायनी, चिंता सर्ग,http://www.hindisamay.com

१२. कामायनी, चिंता सर्ग,http://www.hindisamay.com